



जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ
राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला
संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ
राजा दाऊद (भाग 7) — गलतियाँ
रविवार संदेश, 18 अक्टूबर 2026

2 शमूएल 11-24, 1 इतिहास 17-21

गलतियाँ

दाऊद के जीवन के इस चरण का संक्षिप्त विवरण (लगभग 10 साल का समय):

- दाऊद और बतशेबा: दाऊद ने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया और उसके पति ऊरिय्याह की हत्या करवाने की साज़िश रची। इसके कारण परमेश्वर का न्याय उसके घराने पर आया (2 शमूएल 11)
- नातान की फटकार और दाऊद का पश्चाताप: नातान भविष्यवक्ता ने दाऊद का सामना किया, जिसके बाद दाऊद ने अपने पापों का पश्चाताप किया। पाप के परिणाम होते हैं। वह बच्चा मर गया (2 शमूएल 12:1-15, भजन संहिता 51)
- परमेश्वर की दया: सुलैमान का जन्म हुआ। रब्बा पर कब्ज़ा किया गया (2 शमूएल 12:24-31, 1 इतिहास 20)
- दाऊद ने अपने ही परिवार की समस्याओं को नज़रअंदाज़ किया: अम्नोन, तामार और अबशालोम (2 शमूएल 13-14)
- अबशालोम के साथ संघर्ष: दाऊद के बेटे अबशालोम ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया। इसके कारण गृहयुद्ध हुआ और आखिरकार अबशालोम की मृत्यु हो गई (2 शमूएल 15-18)। दाऊद अपने शत्रुओं को क्षमा करता है (2 शमूएल 19)
- शेबा का विद्रोह (2 शमूएल 20)
- देश के लिए प्रायश्चित (2 शमूएल 21)
- दाऊद का छुटकारे का गीत (2 शमूएल 22)
- दाऊद के वीर योद्धा (2 शमूएल 23, 1 इतिहास 11,12)
- दाऊद की जनगणना और प्रायश्चित (2 शमूएल 24, 1 इतिहास 21)

मुख्य शिक्षाएँ: जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ

युद्ध में डटे रहें। परमेश्वर द्वारा सौंपे गए अपने कार्य के स्थान पर बने रहें।

2 शमूएल 11:1,2

1 फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, उस समय, अर्थात् वर्ष के आरम्भ में दाऊद ने योआब को, और उसके संग अपने सेवकों और समस्त इस्राएलियों को



जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ
राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला
संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

भेजा; और उन्होंने अम्मोनियों का नाश किया, और रब्बा नगर को घेर लिया। **परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया।**

2 साँझ के समय दाऊद पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी।

दाऊद एक योद्धा राजा था। इस समय तक उसने युद्धों में इस्राएल का नेतृत्व किया था। लेकिन किसी अज्ञात कारण से, इस बार दाऊद युद्ध पर जाने के बजाय यरूशलेम में ही रुक गया। बाइबल में उसके ऐसा करने का कारण नहीं बताया गया है, लेकिन विवरण से लगभग ऐसा लगता है कि यह वह समय था जब राजाओं को युद्ध पर जाना चाहिए था। दाऊद घर पर ही रहा, और यही उसके पतन का कारण बना।

इससे हमें एक सीख मिलती है: हमें लड़ाई में डटे रहना चाहिए। परमेश्वर द्वारा सौंपे गए अपने कार्य के स्थान पर बने रहना चाहिए। परमेश्वर ने हमें जो काम सौंपा है, उससे पीछे हटने पर हम असुरक्षित हो जाते हैं और शत्रु के लिए आसान निशाना बन जाते हैं। इसलिए परमेश्वर ने जो काम हमें सौंपा है, उसे करते रहें।

अपने जीवन के मूल आधारों को नज़रअंदाज़ न करें। जब मूल आधार कमजोर पड़ते हैं, तो सब कुछ ढह जाता है।

2 शमूएल 13:21-23

21 जब ये सब बातें दाऊद राजा के कान में पड़ीं, **तब वह बहुत झुँझला उठा।**

22 परन्तु अबशालोम ने अम्मोन से भला-बुरा कुछ न कहा, क्योंकि अम्मोन ने उसकी बहिन तामार को भ्रष्ट किया था, इस कारण अबशालोम उससे घृणा करता था।

23 दो वर्ष के बाद अबशालोम ने एप्रैम के निकट बाल्हासोर में अपनी भेड़ों का ऊन कतरवाया, और अबशालोम ने सब राजकुमारों को नेवता दिया।

दाऊद एक अद्भुत राजा था। वह परमेश्वर से प्रेम करता था और एक महान आराधक था। फिर भी, किसी अज्ञात कारण से उसने अपने ही परिवार की देखभाल करने में लापरवाही की।

2 शमूएल 13 में दाऊद के अपने घर में उसके बच्चों—अबशालोम, तामार और अम्मोन—के बीच समस्याएँ पैदा हो रही थीं। अम्मोन ने अपनी सौतेली बहन तामार के साथ ज़बरदस्ती की थी। तामार, अबशालोम की सगी बहन थी। दाऊद ने इन समस्याओं के बारे में सुना, लेकिन बाइबल में सिर्फ इतना दर्ज है कि वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने कुछ नहीं किया।

अबशालोम बहुत दुखी और क्रोधित था, और धीरे-धीरे उसका दुख अम्मोन के प्रति नफरत में बदल गया। उसने पूरे दो साल इंतज़ार किया, लेकिन दाऊद ने अपने ही परिवार की समस्याओं को सुलझाने के लिए कुछ नहीं किया।



जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ
राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला
संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

इससे हमें एक बहुत ज़रूरी सीख मिलती है। अपने जीवन के मूल आधारों को नज़रअंदाज़ न करें। जब मूल आधार कमज़ोर पड़ते हैं, तो सब कुछ ढह जाता है।

यहाँ मूल आधारों से हमारा मतलब उन ज़रूरी बातों से है जो हमारे व्यक्तित्व और जीवन को आकार देती हैं। हमारा व्यक्तिगत जीवन, हमारा परिवार, सेवकाई में हमारी मुख्य टीम, हमारे मूल सिद्धांत और हमारी ज़रूरी आदतें शामिल हैं।

अंदर से सड़ चुके तने वाला पेड़ - एक पेड़ की पत्तियाँ सुंदर हो सकती हैं, उसकी शाखाएँ मज़बूत दिख सकती हैं और उसमें बहुत फल लग सकते हैं। लेकिन अगर उसका तना अंदर से सड़ रहा है, तो पूरा पेड़ गिरने के खतरे में है।

कमज़ोर नींव वाली इमारत - किसी इमारत की बनावट सुंदर हो सकती है, उसका अंदरूनी हिस्सा महंगा और शानदार हो सकता है और वह बहुत ऊँची भी हो सकती है। लेकिन अगर उसकी नींव कमज़ोर है, तो पूरी इमारत के ढहने का खतरा रहता है।

जो चीज़ें किसी भी व्यवस्था को मज़बूती से थामे रखती हैं, वे अक्सर दिखाई नहीं देती। लेकिन जब वे कमज़ोर पड़ने लगती हैं, तो उन पर खड़ी हर चीज़ खतरे में पड़ जाती है।

परमेश्वर के साथ अपने संबंध को कभी भी सफलता का दिखावा बनाए रखने के लिए बलिदान न करें।

समस्याओं को शुरू में ही सुलझाएँ। देरी विनाश का कारण बन सकती है।

अब परिवार की समस्याएँ और बढ़ गईं। क्योंकि दाऊद ने इस स्थिति के बारे में कुछ नहीं किया, इसलिए अबशालोम ने मामला अपने हाथ में ले लिया। उसने अपनी बहन तामार के साथ अमोन की ज़बरदस्ती का बदला लेने के लिए अपने सौतेले भाई अमोन को मार डाला।

एक बार फिर, और यह बात लगभग विश्वास करना मुश्किल है—दाऊद ने पाँच साल तक कुछ नहीं किया।

2 शमूएल 13:32,38,39

32 तब दाऊद के भाई शिमा के पुत्र योनादाब ने कहा, “मेरा प्रभु यह न समझे कि सब जवान, अर्थात् राजकुमार मार डाले गए हैं, केवल अमोन मारा गया है; क्योंकि जिस दिन उसने अबशालोम की बहिन तामार को भ्रष्ट किया, उसी दिन से अबशालोम की आज्ञा से ऐसी ही बात निश्चित थी।

38 अतः अबशालोम भागकर गश्ूर को गया, और वहाँ तीन वर्ष तक रहा।



जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ
राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला
संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

39 दाऊद के मन में अबशालोम के पास जाने की बड़ी लालसा रही; क्योंकि अम्नोन जो मर गया था, इस कारण उसने उसके विषय में शान्ति पाई।

2 शमूएल 14:23,24,28,29

23 अतः योआब उठकर गशूर को गया, और अबशालोम को यरूशलेम ले आया।

24 तब राजा ने कहा, “वह अपने घर जाकर रहे; और मेरा दर्शन न पाए।” तब अबशालोम अपने घर चला गया, और राजा का दर्शन न पाया।

28 अतः अबशालोम राजा का दर्शन बिना पाए यरूशलेम में दो वर्ष रहा।

29 तब अबशालोम ने योआब को बुलवा भेजा कि उसे राजा के पास भेजे; परन्तु योआब ने उसके पास आने से इन्कार किया। उसने उसे दूसरी बार बुलवा भेजा, परन्तु तब भी उसने आने से इन्कार किया।

2 शमूएल 14:33

तब योआब ने राजा के पास जाकर उसको यह बात सुनाई; और राजा ने अबशालोम को बुलवाया। अतः वह उसके पास गया, और उसके सम्मुख भूमि पर मुँह के बल गिरके दण्डवत् की; और राजा ने अबशालोम को चूमा।

बाइबल कहती है कि “दाऊद के मन में अबशालोम के पास जाने की बड़ी लालसा रही,” लेकिन वह गया नहीं। अच्छी नीयत, अगर काम में न बदले, तो उसका कोई फायदा नहीं।

अबशालोम तीन साल तक छिपा रहा। फिर वह यरूशलेम लौट आया और वहाँ दो साल और रहा, लेकिन दाऊद ने अपने ही बेटे से मुलाकात नहीं की। अबशालोम ने कई बार अपने पिता दाऊद से मिलने की कोशिश की, लेकिन दाऊद उससे नहीं मिला।

आखिरकार, पाँच साल बाद दाऊद ने अबशालोम को बुलाया, उसका स्वागत किया और उसे चूमा। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अबशालोम दाऊद की पहुँच से दूर जा चुका था।

आखिर में अबशालोम ने विद्रोह कर दिया। उसने पूरे राज्य में दाऊद के खिलाफ एक बड़ा विद्रोह खड़ा कर दिया। उसने अपने जीवन में जो उपेक्षा और ठुकराया जाना महसूस किया था, वही उसने पूरे राज्य के लोगों तक पहुँचा दिया। दाऊद को अपनी जान बचाने के लिए यरूशलेम से भागना पड़ा।

भजन संहिता 3

दाऊद का भजन, जब वह अपने बेटे अबशालोम से भाग रहा था।



जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ
राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला
संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

इस सीख को हम अपने जीवन के कई क्षेत्रों में लागू कर सकते हैं— घर और परिवार के रिश्तों में, कार्यस्थल पर, कलीसिया में या मसीही सेवकाई में। समस्याओं को शुरू में ही सुलझाइए। देरी के गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण समय पर की गई देरी, कुछ न करने के बराबर है।

अपने लोगों पर ध्यान रखें। उनके मन को समझें। विद्रोह को पनपने न दें।

नीतिवचन 27:23-27

23 अपनी भेड़-बकरियों की दशा भली-भाँति मन लगाकर जान ले, और अपने सब पशुओं के झुण्डों की देखभाल उचित रीति से कर;

24 क्योंकि सम्पत्ति सदा नहीं ठहरती; और क्या राजमुकुट पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता है?

25 जब कटी हुई घास उठा ली जाती, और नई घास दिखाई देती, और पहाड़ों की हरियाली काटकर इकट्ठी की जाती है;

26 तब भेड़ों के बच्चे तेरे वस्त्र के लिये होंगे, और बकरों के द्वारा खेत का मूल्य दिया जाएगा;

27 और बकरियों का दूध इतना होगा कि तू अपने घराने समेत पेट भरके पिया करेगा, और तेरी दासियों का भी जीवन निर्वाह होता रहेगा।

आखिरकार, अबशालोम मारा गया और विद्रोह दबा दिया गया। दाऊद फिर से यरूशलेम लौट आया। लेकिन उसी समय उसने एक और गलती की, जिसका असर पूरे राष्ट्र पर पड़ा।

उतार-चढ़ाव के समय अपनी कमजोरियों के प्रति सतर्क रहें।

1 इतिहास 21:1

शैतान ने इस्राएल के विरुद्ध उठकर, दाऊद को उकसाया कि इस्राएलियों की गिनती ले।

2 शमूएल 22:1 में दाऊद इस बात का उत्सव मनाता है कि परमेश्वर ने उसे उसके सभी शत्रुओं से छुड़ाया। फिर भी, 1 इतिहास 21:1 में हम पढ़ते हैं कि शैतान ने दाऊद को इस्राएल की जनगणना करने के लिए उकसाया। दाऊद की सफलताओं ने उसकी कमजोरियों को खत्म नहीं किया था। शैतान को दाऊद को हराने के लिए किसी दूसरी सेना की ज़रूरत नहीं थी। उसने दाऊद की अंदरूनी कमजोरी का फायदा उठाया—चाहे वह घमंड का पल हो या खुद पर भरोसा करने का।

हम यहाँ तीन बातें देखते हैं: शैतान की भूमिका, दाऊद की ज़िम्मेदारी और परमेश्वर की प्रभुता।

शैतान ने दाऊद को उकसाया।

दाऊद अपने फैसले के लिए ज़िम्मेदार था।

परमेश्वर सर्वोच्च अधिकारी है। उसने न्याय किया और दया भी दिखाई।



जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ
राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला
संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

परमेश्वर कभी किसी को गलत काम करने के लिए नहीं उकसाता (याकूब 1:13-14)।

लोगों की गिनती करना अपने आप में पाप नहीं था। गिनती करने की आज्ञा परमेश्वर ने खुद गिनती 1:1-3 जैसे वचनों में दी थी। समस्या सिर्फ यह नहीं थी कि दाऊद ने इस्राएल के लोगों की गिनती करवाई, बल्कि यह थी कि उसने इस विशेष जनगणना को ऐसे तरीके से करवाया जिससे परमेश्वर अप्रसन्न हुआ।

परमेश्वर दाऊद के मन को देख रहा था। दाऊद ने योआब को लोगों की गिनती करने की आज्ञा दी, खासकर उन लोगों की जो युद्ध में लड़ सकते थे (2 शमूएल 24:2, 9)। हालाँकि बाइबल स्पष्ट रूप से इसका कारण नहीं बताती, लेकिन संभव है कि दाऊद घमंड, खुद पर भरोसा करने या अपनी सैन्य शक्ति पर निर्भर रहने लगा था।

योआब ने समझ लिया कि कुछ गलत है और उसने दाऊद के फैसले पर सवाल उठाया (2 शमूएल 24:3)। लेकिन दाऊद अपने फैसले पर अड़ा रहा।

दाऊद के इस गलत फैसले के कारण पूरे राष्ट्र को बहुत दुख सहना पड़ा। परमेश्वर को दाऊद का न्याय करना पड़ा।

बाद में दाऊद ने अपने फैसले की ज़िम्मेदारी स्वीकार की और अपनी गलती को पहचाना (2 शमूएल 24:10)।

हम सिर्फ तभी कमज़ोर और असुरक्षित नहीं होते जब हम कमज़ोर, निराश या पराजित महसूस करते हैं। जब हम मज़बूत होते हैं, सफल होते हैं, लोग हमारी तारीफ़ करते हैं और हम अपनी सफलता के शिखर पर होते हैं, तब भी हम कमज़ोर पड़ सकते हैं।

सबसे बड़ी जीत के बाद सबसे बड़ा खतरा आ सकता है। ऐसे समय में भी हमें अपने मन की रक्षा करनी चाहिए, ताकि घमंड, पहचान और तारीफ़ पाने की इच्छा, खुद पर ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा, लापरवाही या अनियंत्रित इच्छाएँ हम पर हावी न हों।

जब हम कठिन समय से गुज़र रहे होते हैं, तब निराशा, कड़वाहट, समझौता करना, अविश्वास और थकान हमारी कमज़ोरियाँ बन सकते हैं।

जब हम सफलता की ऊँचाइयों पर होते हैं, तब घमंड, खुद पर भरोसा करना, अपनी क्षमता को ज़रूरत से ज़्यादा आँकना, लापरवाही, पहचान और तारीफ़ पाने की इच्छा और अनियंत्रित इच्छाएँ हमारी कमज़ोरियाँ बन सकती हैं।

युद्ध का अंत होने का अर्थ यह नहीं है कि हर खतरा भी समाप्त हो गया है।



जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ
राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला
संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

बीते समय की जीत आज की आज्ञाकारिता का स्थान नहीं ले सकती।

कल की जीत आज सतर्क रहने की ज़रूरत को खत्म नहीं करती।

जब सब कुछ अच्छा होता हुआ दिखाई दे, तब आत्मसंतुष्ट हो जाना खतरनाक हो सकता है।

जिस पल हम सोचने लगते हैं कि हमें अब किसी की सलाह की ज़रूरत नहीं है, उसी पल हमें सलाह की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है।

दोस्तों की तारीफ़ कभी-कभी दुश्मनों की आलोचना से भी ज़्यादा खतरनाक हो सकती है।

नीतिवचन 4:23 हमें अपने मन की रक्षा करना सिखाता है। 1 कुरिन्थियों 10:12 हमें चेतावनी देता है कि जब हम सोचते हैं कि हम स्थिर खड़े हैं, तब हमें सावधान रहना चाहिए, कहीं हम गिर न पड़ें। 1 पतरस 5:8 हमें सचेत और सतर्क रहने के लिए कहता है, क्योंकि हमारा एक विरोधी है।

अपने हृदय की रक्षा करें—हर परिस्थिति में, चाहे आप विजय प्राप्त कर रहे हों, आँसू बहा रहे हों या केवल प्रतीक्षा कर रहे हों।

हम जितनी ऊँचाई पर पहुँचते हैं, हमें अपने हर कदम पर उतनी ही सावधानी रखनी चाहिए। एक गलत कदम हमें विनाशकारी पतन की ओर ले जा सकता है।

हमारे लिए मुख्य सीख: जीवन के उतार-चढ़ाव में हर समय अपनी कमज़ोरियों के प्रति सतर्क रहें।

परमेश्वर हमारी गलतियों से बड़ा है। वह हमें फिर से सही मार्ग पर लाता है और पुनर्स्थापित करता है।

दाऊद के जीवन के इस उथल-पुथल भरे दौर में, जहाँ हम एक के बाद एक गलतियाँ देखते हैं, वहीं हम यह भी देखते हैं कि परमेश्वर की प्रभुता, अनुग्रह और दया किस तरह परिस्थितियों में काम कर रही थी। दाऊद की अनेक गलतियों के बावजूद, परमेश्वर ने अपने छुटकारा देने वाले हृदय और अपने हाथ से काम किया।

सुलैमान का जन्म हुआ। दाऊद ने बतशेबा के साथ पाप किया था। फिर भी, परमेश्वर ने अपनी दया से उनके मिलन से सुलैमान को जन्म लेने दिया। आगे चलकर सुलैमान अगला राजा बना।

रब्बा पर अधिकार कर लिया गया। दाऊद ने पाप किया था, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें इस क्षेत्र पर विजय दिलाई।

राज्य सुरक्षित बना रहा। दाऊद ने अपने परिवार की उपेक्षा की और अबशालोम ने विद्रोह कर दिया। फिर भी, परमेश्वर ने अपनी दया से दाऊद को उसका राज्य बनाए रखने में मदद की।



जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ
राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला
संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

एक मन्दिर बनाया गया। यह बात बहुत सुंदर है कि इस्राएल के लोगों की गिनती करवाने की दाऊद की बड़ी गलती के कारण जब परमेश्वर ने राष्ट्र का न्याय किया, तब दाऊद ने प्रायश्चित के लिए ज़मीन का एक टुकड़ा खरीदा। आगे चलकर उसी ज़मीन पर सुलैमान का मंदिर बनाया गया।

2 इतिहास 3:1

तब सुलैमान ने यरूशलेम में **मोरियाह नामक पहाड़ पर** उसी स्थान में यहोवा का भवन बनाना आरम्भ किया, जिसे उसके पिता दाऊद ने दर्शन पाकर **यबूसी ओर्नान के खलिहान में** तैयार किया था।

अरौना और ओर्नान के खलिहान (ये दोनों नाम एक ही व्यक्ति के लिए इस्तेमाल हुए हैं) वह जगह थी जहाँ दाऊद ने परमेश्वर का न्याय रोकने के लिए वेदी बनाई थी (2 शमूएल 24:18-25, 1 इतिहास 21:18-30)। बाद में यही जगह सुलैमान के मंदिर के निर्माण का स्थान बनी। सुलैमान ने दाऊद के खलिहान वाली जगह पर मंदिर बनाया।

2 इतिहास 3:1 में मंदिर के स्थान को **मोरिया पर्वत** भी कहा गया है। इसी नाम का संबंध उस स्थान से भी है जहाँ अब्राहम ने इसहाक को बलिदान करने के लिए अर्पित किया था। हालाँकि, यह निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता कि अब्राहम ने इसहाक को ठीक किस जगह अर्पित किया था, लेकिन **परंपरागत रूप से अब्राहम के बलिदान और दाऊद की वेदी को एक ही पर्वत, मोरिया पर्वत, से जोड़ा जाता है।**

ध्यान दें: 2 शमूएल 24:24 के अनुसार, दाऊद ने खलिहान और बैलों के लिए 50 शेकेल चाँदी चुकाई। वहीं, 1 इतिहास 21:25 में लिखा है कि दाऊद ने उस जगह के लिए 600 शेकेल सोना चुकाया। संभव है कि दाऊद ने पहले खलिहान और बैलों को 50 शेकेल चाँदी देकर खरीदा हो और बाद में मंदिर बनाने के लिए एक बड़ा क्षेत्र 600 शेकेल सोना देकर खरीदा हो। सुलैमान का मंदिर बहुत विशाल था, इसलिए उसके निर्माण के लिए केवल खलिहान ही नहीं, बल्कि उससे कहीं बड़े क्षेत्र की ज़रूरत रही होगी।

ये सारी बातें हमें परमेश्वर की दया के बारे में बताती हैं। परमेश्वर हमारी कहानी को नया रूप देता है। परमेश्वर हमारी गलतियों से बड़ा है। वह हमें पाप से छुड़ाता है, सही रास्ते पर लाता है और हमें पुनर्स्थापित करता है।

इस चरण में दाऊद द्वारा लिखे जाने की सम्भावना वाले भजन:

भजन 51: बतशेबा के साथ पाप करने के बाद पश्चाताप

भजन 32: पाप स्वीकार करने के बाद क्षमा। इस भजन को स्पष्ट रूप से बतशेबा की घटना से नहीं जोड़ा गया है, लेकिन इसकी विषय-वस्तु भजन संहिता 51 के साथ अच्छी तरह मेल खाती है।

भजन 38: पाप के कारण होने वाला दुख और पश्चाताप



जीवन को अंदर से बिखरने से कैसे बचाएँ
राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला
संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

भजन 39: जीवन की नश्वरता, अनुशासन और अपने व्यवहार पर संयम रखना

इन तीन भजनों (32, 38 और 39) को पश्चात्ताप से जुड़े भजन माना जा सकता है, लेकिन यह निश्चित नहीं है कि ये बतशेबा की घटना के बाद ही लिखे गए थे।

भजन 3: अबशालोम से भागते समय। इस भजन का ऐतिहासिक संबंध अबशालोम के विद्रोह से बहुत स्पष्ट है।

सारांश

दाऊद के जीवन के इस दौर से मिलने वाली मुख्य सीखें:

- युद्ध में डटे रहें। परमेश्वर द्वारा सौंपे गए अपने कार्य के स्थान पर बने रहें।
- अपने जीवन के मूल आधारों को नज़रअंदाज़ न करें। जब मूल आधार कमजोर पड़ते हैं, तो सब कुछ ढह जाता है।
- समस्याओं को शुरू में ही सुलझाएँ। देरी विनाश का कारण बन सकती है।
- उतार-चढ़ाव के समय अपनी कमजोरियों के प्रति सतर्क रहें।
- परमेश्वर हमारी गलतियों से बड़ा है। वह हमें फिर से सही मार्ग पर लाता है और पुनर्स्थापित करता है।

सुसमाचार और उद्धार की बुलाहट

अलौकिक सेवकाई का समय

पवित्र आत्मा की अगुवाई के अनुसार सेवकाई करें